E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.711

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
May 2025 Special Issue 18 Volume VI

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli

Akshara Publication

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.711 / May 2025 / Special Issue 18 Volume VI

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

May 2025
Special Issue 18 Volume VI

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.711

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)

Digital Online Identifier-Database System

Akshara Publication
Plot No. 42, Akshara Publication
Gokuldham, Wanjola Road Near Star Lone, Bhusawal, Dist.Jalgaon [M. S.] India 425201

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

***E- EISSN 2582-5429* / SJIF Impact- 5.711 / May 2025 / Special Issue 18 Volume VI**

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No.
1	A Study on the Impact of Mentorship on the Development of Student Teachers	**Mohit Kumar Tiwari**	**05**
2	Trade, Terrorism, and Trust Deficit: Analysing Economic Engagements between India and Pakistan in the 21st Century	**Dr. Laxmi Rambhau kangune** **Dr. Shivaji Gorakshanath Dhokane**	**09**
3	Empowering Consumers with Quality & Transparency – BIS Standards Exhibition at Chandigarh University	**Hrishikesh Mukherjee**	**16**
4	Impact of Entrepreneurship Development on the Economic Development of India	**Dr. Ajinkya G. Deshpande**	**18**
5	Artificial Intelligence for Education:Enhancing Pedagogy and Student Engagement	**Rajesh Kumar Bairwa** **Neeraj Arora**	**22**
6	State of Indian Democracy: An Evaluation of Aspirations and Performance	**Dr. Mamta Rani**	**26**
7	The Chola Sabha: A prototype of Local Government	**Abhijna** **Shashank N.**	**29**
8	The Indo-Pacific Region: Geopolitical Significance and Emerging Trends	**Mr. Khundongbam Bikenath**	**31**
9	Digital Archiving and Beyond: Exploring the Role of Emerging Technologies in Preserving Indigenous Knowledge in India	**Mangesh Janardan Ghodke**	**37**
10	Emerging Trends in Green Finance: Opportunities and Challenges	**Dr. Vivek Arun Joshi**	**41**
11	गढ़वाल हिमालय के लोक गीतों की विवेचना	**डॉ. डी. एस. भण्डारी**	**47**
12	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य में विद्रोह और यथार्थ का स्वर	**निशा मिश्रा**	**49**
13	अज्ञेय की काव्य - भाषा	**डॉ. काकासो बापूसो भोसले**	**52**
14	असगर वजाहत के उपन्यासों में मानवीय मूल्य	**राधेश्याम**	**55**
15	विज्ञापन लेखन के विविध आयाम	**सुषमा माधवराव नरांजे**	**58**
16	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के काव्य में प्रेम: संवेदना, संघर्ष और प्रतीक का सौंदर्यशास्त्र	**निशा मिश्रा**	**63**
17	समकालीन हिंदी उपन्यास - सशक्त स्त्री पात्र	**डॉ. शेख.बेनज़ीर**	**66**
18	हिन्दी गद्य की विधाओं में आत्मकथा का महत्व	**रामकुमार बंजारे** **डॉ. फुलदास महंत**	**70**
19	गॉधीइज्म् ऑफ्टर गॉधी	**डॉ. जावेद अख्तर**	**72**
20	आरंभिक उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन की स्थिति और चेतना	**संजय कुमार**	**75**
21	कबीरदास का समाज सुधारक रूप: एक मूल्याकंन	**डॉ. सुनील कुमार**	**78**
22	संत दादूदयाल के काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता	**डॉ. कोमलकुमार प्रदीपकुमार परदेशी**	**81**
23	हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री विमर्श	**डॉ. शकिला जब्बार मुल्ला**	**84**
24	राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय काशीपुर के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का सूक्ष्म शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन	**डॉ. नीरज कुमार शुक्ल**	**86**
25	नवाचार कार्यक्रमो का उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयो के विद्यार्थियों का गुणवत्ता संवर्धन पर पड़ने वाले प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन	**निश्चल कुमार** **प्रो. बी. आर. कुकरेती / डॉ. तनुजा भट्ट**	**91**
26	सामसंहिता के संस्कारभाष्य में न्यायदर्शन के उपमान प्रमाण का स्रोत	**दिव्यकिरण आर्या**	**94**
27	'गर्दिशों के गणतंत्र में ' काव्य संग्रह में मानवीय चेतना के विविध प्रसंग	**हरिराम मीना**	**98**

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.711 / May 2025 / Special Issue 18 Volume VI

13

अज्ञेय की काव्य - भाषा

डॉ. काकासो बापूसो भोसले
रयत शिक्षण संस्था का, डॉ पतंगराच कदम महा. रामानंदनगर (बुर्ली) तह. पलूस, जि. सांगली

सच्चिदानन्द हीरानंद वात्सायन " अज्ञेय " के काव्य - संसार के विश्लेषण, विवेचन तथा मुल्यांकन के क्रम में उन्हें अनेकानेक विशेषणों से अलंकृत किया गया है। 'आधुनिक हिन्दी कविता में अप्रतिम महत्व रखनेवाला कवि "प्रयोगवाद का पुरोधा कवि, "जीवन-सत्य का अन्वेषक कवि" हिन्दी कविता को नये विचार सुत्र देनेवाला कवि "व्यक्तित्व के निखार के लिए साधना के ताप में झुलसनेवाला साधक कवि कहकर समीक्षकों ने अज्ञेय की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला है। मुल्यांकन के उद्देश्य से प्रेरित समीक्षकों व्दारा लिखे गये इस प्रकार के अभिधानों तथा वाक्यों की भीड में एक समीक्षक का मन्तव्य हमारा ध्यान आकर्षित किये बिना नहीं रहता। उन्होंने लिखा है- "साहित्यकार के सृजनशील व्यक्तित्व का संघटन और साहित्य का माध्यम शब्द दोनों का जितना विवेकपूर्ण चिंतन अज्ञेय ने किया है, उतना हिन्दी में सम्भवतः किसी ने नहीं। अज्ञेय का यह चिंतन उनके सृजनशील साहित्य में भी कलापूर्ण ढंग से प्रक्षेपित हुआ है यह महत्वपूर्ण है। यह कथन केवल इसलिए महत्त्व पूर्ण नहीं है कि इसमें समीक्षक की तुलनात्मक दृष्टि का पता चलता है बल्कि इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इसमें परीक्षतः यह बताया गया है कि अज्ञेय-काव्य के परीक्षण हेतु मानदंडों की खोज उनके काव्य से भी करनी चाहिए। साहित्य के संबंध में अज्ञेय का सोच और सर्जक के रूप में उनका आचरण इन दोनों को एक-दूसरे के सम्मुख रखकर उनमें निहित संगति की खोजव्दारा अज्ञेय-काव्य के विवेचन की यह पध्दति निश्चय ही उपयुक्त एवं न्याय संगत है। इस संक्षिप्त लेख में इसी पध्दति को अपनाकर अज्ञेय की काव्य-भाषा का विवेचन किया गया है।

कविता के माध्यम-शब्द या भाषा के संबंध में अज्ञेय का चिंतन "तारसप्तक" के "वक्तव्य" में स्पष्ट हुआ है। वक्तव्य के कुछ महत्वपूर्ण अंश इस प्रकार हैं-

१. शब्दों, के साधारण अर्थ से बड़ा अर्थ हम उसमें भरना चाहते हैं, पर उसे बड़े अर्थ को पाठक के मन में उतार देने के साधन अपर्याप्त हैं। (तार सप्तक-पृ. २७०)

२. कवि भाषा में अधिक सारगर्भित अर्थ भरना चाहता है इसलिए कि वह "व्यक्तिएत्स" को व्यापक सत्य बनाने का सनातन उत्तरदायित्त्व अब भी निभाना चाहता है पर देखता है कि साधारणीकरण की पुरानी प्रणालियाँ, जीवन के ज्वालामुखी से बहकर आते हुए लावा ते ही भरकर और जमकर रुध्द हो गयी हैं, प्राणसंचार का मार्ग उनमें नहीं है ।.... जो व्यक्ति का अनुभूत है, उसे समष्टितक कैसे उसकी सम्पूर्णता मैं पहुंचाया जाये यही पहली समस्या है जो प्रयोगशीलता को ललकारती है । (तारसप्तक पृ. २७१)

3. ऐसा प्रयोग अनुज्ञेय नहीं है जो" किसी की किस पर अभिव्यक्ति " के धर्म को भूलकर चलता है। (तार सप्तक पृ. २७१)

३. ऐसा प्रयोग अनुज्ञेय नहीं है जो "किसी की किस पर अभिव्यक्ति" के धर्म को भूलकर चलता है। (तार सप्तक पृ. २७१)

४. जीवन की जटिलता को अभिव्यक्त करनेवाले कवि की भाषा का किसी गूढ, अलौकिक अथवा दीक्षा-व्दारा गम्य हो जाना अनिवार्य है, किन्तु यह उसकी नहीं विवशता है, धर्म नहीं, आपध्दर्म है।(तार सप्तक प. २७२) इन अंगों का सार यही है कि काव्य में असाधारण व्यथा की अभिव्यक्ति हेतु प्रयोग की आवश्यकता महसूस की जाती है।

· कविता में अर्थ और भाषा की सुसंवादी स्थिति की आवश्यकता, असार्थ अर्थ की अभिव्यक्ति हेतु प्रचलित भाषा की अपर्याप्तता एवं उसमें विविध स्तरों पर की आवश्यकता आदि की कलात्मक अभिव्यक्ति अक्षय की कई कविताओ में मिलती है इस दृष्टि से उनकी शब्द और सत्य', 'जो कहा नहीं गया", "कलगी बाजरे की कविताएँ उल्लेखनीय है।" अज्ञेय शब्द और अर्थ की बीच की दीवार को एक संकट माना और उसे दूर करना चाहते हैं। कवि के लिए शब्द और अर्थ के चिर सहचर होने की तभी हो सकती है जब वे दोनों शब्द और अर्थ मिलकर रहेंगे, निकट नहीं। स्पष्ट है कि अज्ञेय अभप्सित अर्थ ही अभिव्यक्ति हेतु सटीक शब्द योजना को बहुत महत्व देते हैं। दूसरी बात यह है कि वे घिसे-पिटे शब्दों के स्थानपर नये उपमानों प्रतीकोंका वे समर्थन करते हैं। "कलगी बाजरे की मैं" वे लिखते हैं-

ये उपमान मैले हो गये हैं।
देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच ।
कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि अपने अनुभूत सत्य को वाणी देने में शब्दों की तोड- मरोड भाषिक प्रयोग, नये उपमान प्रतीकों की योजना हर स्थिति में सफल होती ही है। अज्ञेय के मतानुसार शब्दों की व्यर्थता का संकट फिर भी बना रहता है। "जो कहा नहीं गया" कविता की पंक्तियाँ इसी बात को स्पष्ट करती हैं -

शब्द यह सही है, सब व्यर्थ हैं
पर इसिलिए कि शब्दातील कुछ अर्थ हैं।